

СОБЕСЕДНИК

Б. КАВЕРИН



"Что и говорить, Ленинград
как был, так и остался городом,
который, неизвестно как и почему,
продолжает улаживать в мои дни...
хотя вконец я переехала
в Тюмень"

А. Инженер

Дружок

Особый

Результат

БИБЛИОТЕКА
САМУНОВОЙ ФАИНЫ ЗИНОВЬЕВНЫ

В. КАВЕРИН. СОБЕСЕДНИК

Воспоминания и портреты

1-980467

С О В Е Т С К И Й П И С А Т Е Л Ь М О С К В А 1 9 7 3



СОДЕРЖАНИЕ

I. В СТАРОМ ДОМЕ

| | |
|--------------------------------------|-----|
| Вступление | 7 |
| Дом № 5 | 9 |
| Семинары | 14 |
| Город Эн | 19 |
| Эскиз к портрету | 23 |
| Петроград, 1921 | 40 |
| Последний вечер | 51 |
| Брат алеут | 53 |
| Встречи в Красной гостиной | 58 |
| Детское зрение | 66 |
| Он любил удивлять | 71 |
| Театр теней | 75 |
| Ты будешь адмиралом | 80 |
| «Мой временник» | 85 |
| Третья Элоиза | 92 |
| Горьковские дневники | 95 |
| Грин и его «Крысолов» | 104 |
| Исторический роман | 112 |
| Профессор Т. | 119 |
| Гоголь и Мейерхольд | 148 |
| Что такое успех? | 156 |
| Из прощальной лекции | 162 |
| Заключение | 167 |

II. ЧУВСТВО И ВРЕМЯ

| | |
|--|-----|
| Место в мире | 173 |
| Явор | 186 |
| Я — добрый лев! | 199 |
| Собеседник. Заметки о чтении | 218 |
| Несколько лет | 245 |

III. МАЛИНОВЫЙ ЗВОН. ПУТЕВЫЕ ЗАПИСКИ

| | |
|---|-----|
| Вступление | 271 |
| Счастливая случайность | 273 |
| Промелькнувший Люксембург | 274 |
| Ян Бос | 276 |
| Переписка | 279 |
| Память | 285 |
| В «Театре четырех су» | 289 |
| Критика чистого случая | 293 |
| Вторник. Утро | 297 |
| Вторник. Вечер | 300 |
| Малиновый звон | 301 |
| Русские судьбы | 306 |
| Брюгге | 310 |
| Новое зрение | 315 |
| Зеркало совы | 318 |
| Дворец правосудия. Рыбный базар | 325 |
| Пингвины и прощание | 331 |